सादर प्रकाशनार्थ

मानिकपुर में सात दिवसीय श्रीमद् भागवत गीता सम्पन्न

कोरबाः10/12/2017—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व—विद्यालय के तत्वाधान में सात दिवसीय संगीतमय श्रीमद् भागवत गीता मानिकपुर में सम्पन्न हुआ। इस ज्ञान यज्ञ में श्रद्धालुओं ने तिल जौ घी की आहुति के साथ साथ, स्वयं के अंदर छिपे हुए पांच विकारों की वंशावली बुराईयों को भी स्वाहा किया। ब्रह्माकुमारी लीना बहन ने भागवद् कथा जीवन में एक अनेक दुःखों से निवारण कर सुख प्राप्ति को रास्ता दिखलाता है। आपने सन्यास और त्याग का यथार्थ अर्थ बतलात हुए कहा कि त्याग तीन प्रकार के हैंः यज्ञ, दान और तप। नित कर्म को कर्तव्य समझकर करते हुए इसमें आसक्ति और फल को त्यागना ही सच्चा त्याग है। सम्पूर्ण कर्म का त्याग करना सम्भव नहीं है। लेकिन जो कर्म के फल के त्यागी है वही सच्चा सन्यास है, यही सात्विक त्याग है। जो त्याग कष्ट के साथ किया जाता है उसे राजसिक की श्रेणी में गिना जायेगा। जहां मोह समझ कर अपनी जिम्मेदारियों से भागना व पलायन करना होता है। इसे तामसिक त्याग की श्रेणी में गिना जायेगा। नष्टोमोहा और ईश्वर से सर्व संबंधों को निभाना ही सर्व प्राप्तियों का आधार है। बह्माकुमारी रूकमणी बहन ने सभी को आशीष वचन देते हुए कहा कि ज्ञान यज्ञ सम्पन्न होने का अर्थ ही है कि स्वयं की दृष्टि, वृत्ति और कृति का परिवर्तन। इसका तात्पर्य यह है कि नकारात्मक व व्यर्थ विचारों पर विजय प्राप्त करके, कार्य व्यवहार में सकारात्क परिवर्तन लाना। ब्रह्माकुमारी बिन्दू बहन ने कहा कि हर कर्म का फल उसकी परछाई के साथ उससे जुड़ा हुआ है। इसलिये कर्म से प्राप्त होने वाले फल की आश नहीं रखनी चाहिए। जो जितना समर्पण भाव और भावना के साथ कर्म करता है, उसका फल उतनी ही प्रालब्ध के साथ जुड़ जाता है। लेकिन राजयोग की शिक्षायें श्रेष्ठ कर्म करने तथा नर से नारायण बनने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। नष्टोमोहा बनने के साथ साथ अपनी भावना वृहद और सर्व के कल्याण प्रति कर्म करना ही, श्रेष्ठ कर्म की श्रेणी में गिना जायेगा। इसलिये भगवान ने अर्जुन को कहा कि इस पवित्र ज्ञान का प्रतिदिन अध्ययन कर जो श्रद्धा से सुनेगा और सुनायेगा, तो सर्व पापों से मुक्त हो, स्वर्ग में श्रेष्ठतम प्रालब्ध का अधिकारी बनेगा। सीताराम चौहान पार्षद ने कहा कि आध्यत्मिक ज्ञान में वह शक्ति है, जो मनोबल को विकसित करता है, मानसिक प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। एस.जी.सिंह वरिष्ठ नागरिक ने कहा कि परमात्मा के साथ हमारी प्रीति बुद्धि बनने के कारण, हमारी बुद्धि के अंदर भी एक दिव्य शक्ति का संचार होता है, जिससे हर कदम में विजय प्राप्त होती है। घनाराम यादव ने कहा कि सुखदाता सच्चिदानंद परमात्मा का बनने से, आपका जीवन ही सुखमय और अतीन्द्रिय सुख से भरपूर बन जाता है। लतेल यादव और उनके परिवार ने कार्यकम के संयोजन में अपनी भूमिका निभाई।

मानवता की सेवा में, ब्रह्माकुमारी रूकमणी